1.5

# सामाजिक विज्ञान का शिक्षण

jk"Vh; Qkdl leg

dk

vk/kkj&i=



1.5

# सामाजिक विज्ञान का शिक्षण

## jk”Vh; Qkdl leg
## dk
## vk/kkj&i=


राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

*प्रथम संस्करण*
*अक्टूबर 2007 भाद्रपद 1929*

**PD 3T NSY**



**रु. 15.00**

*एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 70 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।*

*प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा बंगाल ऑफसैट वर्क्स, 335, खजूर रोड, करोल बाग, नयी दिल्ली 110 005 द्वारा मुद्रित।*

**ISBN 81-7450-799-X**



**एन सी ई आर टी के प्रकाशन विभाग के कार्यालय**

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
**नयी दिल्ली 110 016** फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III स्टेज
**बेंगलुरु 560 085** फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
**अहमदाबाद 380 014** फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
धनकल बस स्टॉप के सामने, पनिहटी
**कोलकाता 700 114** फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
**गुवाहाटी 781021** फोन : 0361-2674869

**प्रकाशन सहयोग**

| | | |
|---|---|---|
| अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग | : | *पेय्यटी राजाकुमार* |
| मुख्य उत्पादन अधिकारी | : | *शिव कुमार* |
| मुख्य संपादक | : | *श्वेता उप्पल* |
| मुख्य व्यापार प्रबंधक | : | *गौतम गांगुली* |
| संपादक | : | *नरेश यादव* |
| उत्पादन सहायक | : | *प्रकाशवीर सिंह* |

**सज्जा एवं आवरण**
*श्वेता राव*

## सार-संक्षेप

### सामाजिक विज्ञान का शिक्षण

सामाजिक विज्ञान समाज के विविध सरोकारों को अपने अंदर समेटता है और इसमें इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र आदि विषयों की विस्तृत सामग्रियाँ सम्मिलित होती हैं। एक अर्थपूर्ण सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या अपनी पाठ्य सामग्री के चयन व गठन द्वारा विद्यार्थियों में समाज की आलोचनात्मक जानकारी विकसित करने में समर्थ होती है, अतः यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। नए आयामों और सरोकारों को समाहित किए जाने की भी अनेक संभावनाएँ हैं, विशेषकर विद्यार्थियों के अपने जीवन अनुभवों के आधार पर।

सामाजिक विज्ञान का महत्त्व न केवल तेज़ी से विकसित होते हुए सेवा क्षेत्र के रोज़गारों में इसकी बढ़ती प्रासंगिकता के कारण है, बल्कि एक विश्लेषणात्मक और रचनात्मक मस्तिष्क की नींव तैयार करने में इसकी अनिवार्यता के कारण भी है।

प्रायः यह माना जाता है कि मात्र प्राकृतिक और भौतिक तत्वों का ही वैज्ञानिक परीक्षण संभव है तथा मानव विज्ञान से संबंधित ज्ञान क्षेत्रों (इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र आदि) की प्रकृति वैज्ञानिक नहीं है। परंतु, यह पहचानना आवश्यक है कि प्राकृतिक व भौतिक विज्ञान की तरह सामाजिक विज्ञान भी वैज्ञानिक जाँच-पड़ताल हेतु उपयुक्त है। साथ ही यह भी स्पष्ट करना आवश्यक है कि सामाजिक विज्ञान द्वारा अपनाई गई पद्धतियाँ प्राकृतिक और भौतिक विज्ञान के सिद्धांतों से भिन्न हैं (किंतु किसी अर्थ में कम नहीं)।

सामाजिक विज्ञान स्वतंत्रता, विश्वास, पारस्परिक सम्मान और विविधता के प्रति सम्मान जैसे मानवीय गुणों के लिए एक जनाधार का निर्माण करने और उसका विस्तार करने की नियामक ज़िम्मेदारी का वहन करता है। अतः सामाजिक विज्ञान शिक्षण का ध्येय बच्चों को एक नैतिक और मानसिक ऊर्जा प्रदान करना होना चाहिए ताकि वे स्वतंत्र रूप से सोच सकें और अपनी विशिष्टता खोये बिना उन सामाजिक बलों का सामना कर सकें जिनसे इन मूल्यों को खतरा है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण इस उद्देश्य की प्राप्ति बच्चों में सामाजिक विषयों पर विवेचनात्मक चिंतन की योग्यता को बढ़ावा देकर कर सकता है, जो व्यक्तिगत और सामाजिक हितों के बीच मौलिक सहभाव का वहन करते हैं। आलोचनात्मक चिंतन के मद्देनज़र शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों के लिए एक ऐसी व्यापक पाठ्यचर्या की कल्पना की गई है, जिसमें ज्ञान प्राप्ति में बिना किसी दबाव के विद्यार्थियों और शिक्षकों की भागीदारी हो। ऐसी सहजता तथा सहभागिता के द्वारा ही विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए पठन-पाठन रुचिपूर्ण और आनंददायक बनाया जा सकता है।

सामाजिक विज्ञान का निर्माण करने वाले विषय; जैसे-इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र और अर्थशास्त्र की स्पष्ट प्रणालियाँ हैं जिनमें प्रायः सीमाओं को बनाए रखना ही उचित माना जाता है। इन विषय-सीमाओं को खोलने की आवश्यकता है ताकि दी गई परिघटना को समझने के लिए कई तरह के उपागमों का प्रयोग किया जा सके। एक समर्थ पाठ्यचर्या के लिए ऐसी विषय-वस्तु की आवश्यकता है जो अंतर्विषयक विचारधारा को प्रोत्साहित करे।

**प्रस्तावित ज्ञान मीमांसीय ढाँचा**—प्रचलित विचारधाराओं तथा विचारणीय मुद्दों को ध्यान में रखते हुए, नए पाठ्यक्रम के निर्माण में निम्नलिखित बिंदु बुनियादी तर्क प्रदान करते हैं-

- पाठ्यचर्या यह स्पष्ट करने योग्य होनी चाहिए कि लोगों की स्थानीय समझ में राष्ट्र और राष्ट्रीय एकता का क्या रूप है। अतः स्थानीय समझ को पाठ्यचर्या के पुनर्निर्माण में स्पष्ट किया जाना है।
- पाठ्यपुस्तक की अवधारणा को मात्र निर्देशात्मक न बनाकर सुझावात्मक बनाए जाने की आवश्यकता है। ऐसा माना गया है कि यह सीखने वालों को पर्याप्त अवसर प्रदान करेगी ताकि वे पाठ्यपुस्तक के परे भी जा सकें तथा आगे की पढ़ाई के लिए उनमें उत्सुकता बढ़े जो किसी सामाजिक परिघटना की समझ को समृद्ध बनाने के लिए आवश्यक है।
- सामाजिक विज्ञान की पाठ्यचर्या का मुख्य उद्देश्य अभी भी उपयोगितावादी प्रकृति का है। तात्पर्य यह है कि इसमें विकासवादी मुद्दों पर अधिक ज़ोर दिया जाता है, जो महत्त्वपूर्ण तो हैं लेकिन समानता, न्याय और सामाजिक-राजनैतिक गरिमा आदि आदर्शक आयामों को समझने के लिए अपर्याप्त हैं। इस प्रकार सामाजिक विज्ञान के शिक्षण को इस विकास में व्यक्ति की भूमिका के साथ जोड़ा जाता रहा है। इस दूरी के मद्देनज़र पाठ्यचर्या के केंद्र बिंदु को उपयोगितावाद से समतावाद की तरफ़ ले जाने की आवश्यकता है, जो ऊपर बताए गए आदर्शक मुद्दों पर विचार करे।
- नागरिक शास्त्र के नाम को राजनीति शास्त्र में परिवर्तित करने का सुझाव दिया गया है। भारतीय विद्यालयी पाठ्यचर्या में एक विषय के रूप में नागरिक शास्त्र औपनिवेशिक युग की देन है, जो भारतीयों में अंग्रेज़ी-राज के प्रति बढ़ती हुई निष्ठाहीनता को देखते हुए शामिल किया गया था। नागरिकों की आज्ञाकारिता और निष्ठा तथा प्रगति के सार्वभौमिक नियमों के अनुसार सभ्य समाज का निर्माण औपनिवेशिक नागरिक शास्त्र के मूल लक्षण थे। इसके विपरीत राजनीति शास्त्र ऊर्जावाद (परिवर्तन) का परिचायक है जिसमें सत्ता की प्रभुतासंपन्न संरचना और सामाजिक बलों द्वारा उनका विरोध आदि प्रक्रियाएँ शामिल हैं। वस्तुतः राजनीति शास्त्र एक ऐसे सभ्य समाज की कल्पना करता है जो अधिक संवेदनशील, अवगत और उत्तरदायी नागरिकों का निर्माण कर सके।
- किसी भी ऐतिहासिक और समकालीन विषय पर चर्चा के दौरान स्त्री-परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखकर जेंडर संबंधी सरोकारों को संबोधित करने की आवश्यकता है। इतिहास और दैनिक जीवन से व्यक्तियों के उल्लेख के स्थान पर महिलाओं के संघर्षों का वर्णन दिया जाना चाहिए, जिसके लिए पितृसत्तात्मक राष्ट्रवादी संरचना में परिवर्तन की आवश्यकता है।

**पाठ्यचर्या की योजना**

**प्राथमिक कक्षाओं** के लिए प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण को भाषा और गणित के अविभाज्य अंग के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए (जिसमें जेंडर-संवेदनशीलता को भी स्थान दिया जाए)। बच्चों को उन क्रियाओं में संलग्न किया जाना चाहिए जो उनकी प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण संबंधी समझदारी को बढ़ाने में मदद कर सकें। इस स्तर पर अमूर्तन के आधार पर नहीं बल्कि और

उदाहरणों के आधार पर समझाया जाना चाहिए। जीवन के भौतिकीय, जैविकीय, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं से सचित्र उदाहरण देने की आवश्यकता है। बच्चों में अवलोकन, पहचानने और वर्गीकरण करने के कौशलों के विकास के लिए यह महत्त्वपूर्ण है।

**3 से 5 तक की कक्षाओं** के लिए पर्यावरण अध्ययन को एक नए विषय के रूप में शामिल किया जाएगा। बच्चों में प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण के संबंधों की पहचान करने तथा उन्हें समझने की योग्यता का विकास होना चाहिए। उन्हें प्राकृतिक विविधता और सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता के बीच समानता की पहचान करना सिखाना चाहिए। अवलोकन और अनुभव के द्वारा सामाजिक विज्ञान शिक्षण बच्चों में ज्ञान-आधारित क्षमता का विकास कर सकता है। हमारी पाठ्यचर्या में सामाजिक विज्ञान शिक्षण के इसी पहलू का प्रायः अभाव है।

**उच्च प्राथमिक स्तर पर** सामाजिक विज्ञान में इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र और अर्थशास्त्र से विषय-वस्तु ली जाएगी। साथ ही बच्चों को समकालीन मुद्दों और समस्याओं से भी परिचित कराया जा सकता है। समकालीन मुद्दों को कई परिप्रेक्ष्यों से देखते हुए बच्चों को समाज की सामाजिक और आर्थिक समस्याओं से अवगत कराया जा सकता है। गरीबी, निरक्षरता, बालश्रम और बंधुआ मजदूरी, वर्ग, जाति, जेंडर और पर्यावरण जैसे मुद्दों पर बल देने की आवश्यकता है। भूगोल और अर्थशास्त्र दोनों ही विषय स्थानीय से वैश्विक सभी स्तरों पर पर्यावरण, संसाधन तथा विकास संबंधी मुद्दों पर उचित परिप्रेक्ष्य के विकास में सहायक होंगे। इसी प्रकार अनेकत्व और परिवर्तन की अवधारणाओं पर बल देते हुए भारतीय इतिहास भी पढ़ाया जाएगा। स्थानीय, प्रांतीय और केंद्रीय स्तर पर सरकार के गठन और संचालन की प्रक्रिया तथा इसमें भाग लेने की लोकतांत्रिक प्रक्रिया से भी बच्चे को अवगत कराया जाएगा।

**माध्यमिक स्तर पर** सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत भूगोल, राजनीति शास्त्र और अर्थशास्त्र के विषय लिए गए हैं। समकालीन भारत पर मुख्य रूप से ध्यान दिया जाएगा और विद्यार्थी उन सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों की गहरी जानकारी हासिल करने की ओर पहलकदमी करेंगे जिनका सामना आज राष्ट्र कर रहा है। ज्ञान मीमांसीय क्षेत्र में प्रस्तावित परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए समकालीन भारत की चर्चा आदिवासी, दलित और मताधिकार से वंचित जनसंख्या के परिप्रेक्ष्य में की जाएगी तथा प्रयास होना चाहिए कि पठन सामग्री को यथासंभव बच्चों के दैनिक जीवन से जोड़ा जाए।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम और उसमें विभिन्न क्षेत्रों के योगदान का अध्ययन किया जाएगा। भारत का राष्ट्रीय आंदोलन और एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में इसके विकास को आधुनिक विश्व के विकास के संदर्भ में पढ़ाया जाएगा। यह ज़रूरी है कि भूगोल से संबंधित मुद्दों को बच्चे में संरक्षण और पर्यावरण संबंधी सरोकारों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए पढ़ाया जाए। राजनीति शास्त्र में दार्शनिक आधारों की चर्चा पर बल दिया जाना चाहिए जो भारतीय संविधान संरचना के मूल्यों की नींव हैं अर्थात् समानता, स्वतंत्रता, न्याय, भाईचारा, आत्मसम्मान, अनेकता और शोषण से मुक्ति आदि पर गहराई से परिचर्चा। चूँकि अर्थशास्त्र के विषय क्षेत्र का बच्चे से इसी स्तर पर परिचय कराया जा रहा है इसलिए यह महत्त्वपूर्ण है कि विषय का उल्लेख जन समूह के परिप्रेक्ष्य में हो। उदाहरण के लिए गरीबी और बेरोज़गारी जैसे विषयों को आर्थिक संस्थानों के संचालन और आर्थिक संबंधों द्वारा संपोषित असमानता के आधार पर समझाया जा सकता है।

**उच्चतर माध्यमिक स्तर** इसलिए महत्त्वपूर्ण माना जाता है कि यह विद्यार्थियों को उनकी आवश्यकता, रुचि और अभिरुचि के अनुरूप विषय क्षेत्र चुनने का अवसर देता है। कुछ विद्यार्थियों के लिए यह स्तर औपचारिक शिक्षा की समाप्ति और कार्य क्षेत्र की ओर बढ़ने का समय हो सकता है, जबकि कुछ के लिए उच्च शिक्षा का आधार बनता है। वे या तो विशिष्ट अकादमिक पाठ्यक्रमों को चुनें या रोज़गारपरक व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को, यह उन पर निर्भर करता है कि वे किसे महत्त्व देते हैं। इस स्तर पर डाली गई नींव उन्हें आधारभूत ज्ञान, दक्षता और प्रवृत्ति से युक्त करने में सक्षम होनी चाहिए ताकि वे अपने द्वारा चुने गए क्षेत्र में सार्थक योगदान कर सकें।

सामाजिक विज्ञान और वाणिज्य से विविध पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को उपलब्ध हो सकते हैं और वे अपनी रुचियों और प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए सही विकल्पों का चुनाव कर सकते हैं। विषयों और पाठ्यक्रमों को अलग-अलग क्षेत्रों में वर्गीकृत करने की आवश्यकता नहीं है लेकिन विद्यार्थियों को किसी भी वर्ग के विषय या पाठ्यक्रम को अपनी आवश्यकता, रुचि और प्रवृत्ति के अनुसार चुनने का विकल्प दिया जा सकता है। इस स्तर पर सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत राजनीति शास्त्र, भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और मनोविज्ञान जैसे विषय हो सकते हैं। वाणिज्य के अंतर्गत व्यावसायिक शिक्षा और लेखाशास्त्र हो सकते हैं।

## शिक्षण के अभिगम-शिक्षाशास्त्र तथा संसाधन

विद्यार्थियों द्वारा परस्पर अंतर्क्रियायुक्त वातावरण में ज्ञान तथा कुशलता अर्जित करने की दिशा में सामाजिक विज्ञान के शिक्षण को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। सामाजिक विज्ञान के शिक्षण में ऐसी विधियों का समावेश होना चाहिए जो रचनात्मकता, सौंदर्यबोध और आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य को प्रोत्साहित करे एवं बच्चों को अतीत और वर्तमान के बीच संबंध स्थापित करने तथा समाज में हो रहे परिवर्तनों को समझने में सक्षम बनाए। समस्या-समाधान, नाटकीय रूपांतर तथा भूमिका-निर्वाह कुछ ऐसी विधाएँ हैं जिन्हें उपयोग में लाया जा सकता है। शिक्षण में फोटोग्राफ़, चार्ट तथा मानचित्र एवं पुरातत्ववादी तथा भौतिक एवं सांस्कृतिक प्रतिकृतियों जैसी अधिक श्रव्य-दृश्य सामग्रियों का प्रयोग होना चाहिए।

सीखने की प्रक्रिया को परस्पर भागीदारी की प्रक्रिया बनाने के लिए आवश्यक है कि मात्र सूचनाओं के आदान-प्रदान के स्थान पर वाद-विवाद और परिचर्चा को प्राथमिकता मिले। अधिगम की यह विधि शिक्षकों और विद्यार्थियों को सामाजिक वास्तविकताओं के प्रति सचेत रखेगी।

अवधारणाओं को व्यक्तियों और समुदायों के सजीव अनुभवों द्वारा विद्यार्थियों को स्पष्ट किया जाना चाहिए। यह भी प्रायः देखा गया है कि सांस्कृतिक, सामाजिक और वर्ग भिन्नता के कारण कक्षा में शिक्षकों के पूर्वाग्रह और पक्षपात की प्रवृत्ति झलकती है। इसलिए शिक्षण के उपागम को बंधनमुक्त होने की आवश्यकता है। शिक्षकों को सामाजिक यथार्थता के विभिन्न आयामों की चर्चा कक्षा में करनी चाहिए और अपने आप में और विद्यार्थियों में स्वबोध बढ़ाने की दिशा में कार्य करना चाहिए।

# राष्ट्रीय फोकस समूह
# *सामाजिक विज्ञान का शिक्षण*
# के सदस्यों के नाम

**प्रो. गोपाल गुरु**
*अध्यक्ष*
राजनीति विज्ञान केंद्र
सामाजिक विज्ञान संस्थान
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नयी दिल्ली–110067

**डॉ. एस. परसुरामन**
*निदेशक*
टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान देवनार
मुंबई – 400088, महाराष्ट्र

**प्रो. वी.बी. अत्रेय**
*अध्यक्ष,* अर्थशास्त्र विभाग
भारथिदासन विश्वविद्यालय
तिरुचिरापल्ली – 620024
तमिलनाडु

**डॉ. निवेदिता मेनन**
राजनीति विज्ञान विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली–110 007

**सुश्री येमुना सन्नी**
एकलव्य, कोठी बाजार
होशंगाबाद–461 001
मध्य प्रदेश

**श्री बिजय के. बोहिदार**
राजनीति विज्ञान विभाग
खल्लिकोट ऑटोनोमस कॉलेज
ब्रह्मपुर–760 001
उड़ीसा

**श्री एम.सी. चार्ल्स**
*प्राचार्य,* जवाहर नवोदय विद्यालय
रातिबाद, भोपाल
मध्य प्रदेश

**सुश्री सरोज शर्मा**
द मदर्स इंटरनेशनल स्कूल
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली–110 016

**प्रो. नारायणी गुप्ता**
75, मस्जिद मोठ
ग्रेटर कैलाश, पार्ट II
नयी दिल्ली–110 048

**डॉ. प्रीतिश आचार्य**
*रीडर*
डी.ई.एस.एस.एच.
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
(एन.सी.ई.आर.टी.)
भुवनेश्वर–751 022, उड़ीसा

**डॉ. नीरजा रश्मि**
*रीडर*
डी.ई.एस.एस.एच., एन.सी.ई.आर.टी.
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली–110016

**डॉ. मीनू नंद्राजोग**
*रीडर*
डी.ई.एस.एस.एच., एन.सी.ई.आर.टी.
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली–110016

**डॉ. मंजु भट्ट**
*रीडर*
डी.ई.एस.एस.एच., एन.सी.ई.आर.टी.
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली–110016

**सुश्री डब्ल्यू. थेमिचॉन**
*लेक्चरर*
डी.ई.एस.एस.एच., एन.सी.ई.आर.टी.
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली–110016

**प्रो. सविता सिन्हा *(सदस्य सचिव)***
*अध्यक्ष*
डी.ई.एस.एस.एच.
एन.सी.ई.आर.टी.
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली–110016

**आमंत्रित सदस्य**

**प्रो. सत्य पी. गौतम**
सेंटर फॉर फिलॉस्फी
स्कूल ऑफ़ सोशल साइंसेज़
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जे.एन.यू.)
नयी दिल्ली–110067

**प्रो. भास्कर भोले *(सेवानिवृत)***
16–बी, विद्या विहार
प्रताप नगर
नागपुर

**डॉ. शारदा बालगोपालन**
सी.एस.डी.एस.
29, राजपुर रोड
दिल्ली

---

**अनुवाद सहयोग**

**श्री अनिल चमड़िया,** *लेखक–पत्रकार,* सी–251, सेक्टर–19, रोहिणी, दिल्ली 110085
**डॉ. नीरजा रश्मि,** *रीडर,* डी.ई.एस.एस.एच., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली 110016
**डॉ. संजय दूबे,** *रीडर,* डी.ई.एस.एस.एच., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली 110016
**श्रीमती सारिका चन्द्रवंशी,** *लेक्चरर,* डी.ई.एस.एस.एच., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली 110016
**डा. रंजना अरोड़ा,** *रीडर,* पाठ्यचर्या समूह, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली 110016

# fo'k; -lwph

## 1. पृष्ठभूमि

सामाजिक विज्ञान समाज के विविध सरोकारों को समाविष्ट करता है तथा इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र आदि विषयों से सामग्रियाँ लेता है। एक सार्थक सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या अपनी पाठ्य सामग्री के चयन व गठन द्वारा विद्यार्थियों में समाज की आलोचनात्मक समझ विकसित करने में समर्थ होती है, अतः यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। नए आयामों और सरोकारों को शामिल किए जाने की अपार संभावनाएँ हैं, विशेषतः विद्यार्थियों के जीवन के निजी अनुभवों से।

विभिन्न पाठ्यचर्या–रूपरेखाओं ने सामाजिक विज्ञान में विषय–वस्तु के गठन के आधार पर अलग–अलग मत दिए हैं। यद्यपि 1975 की पाठ्यचर्या की रूपरेखा में कहा गया था, "प्रत्येक विषय की आवश्यक इकाइयों की पहचान करके उन्हें एक समग्र पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए", फिर भी सामाजिक विज्ञान अलग–अलग विषयों के रूप में पढ़ाया जाता था और एन.सी.ई.आर.टी. ने कक्षा छह से दस तक के लिए इतिहास, भूगोल और नागरिक शास्त्र की तीन अलग–अलग पाठ्यपुस्तकें तैयार कीं (दस वर्षीय विद्यालय के लिए पाठ्यचर्या–एक रूपरेखा, पृष्ठ 20)। परंतु परीक्षा के उद्देश्य से ये तीनों विषय एक ही प्रश्न पत्र में रखे गए थे जिसे सामाजिक विज्ञान कहा जाता था। 1988 में पाठ्यचर्या के पुनरीक्षण ने उच्च प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं किया है। यद्यपि इसमें स्पष्ट रूप से कहा गया है, "सामाजिक विज्ञान की पाठ्यचर्या तैयार करने में अब से विशेष सावधानी बरती जाए ताकि किसी भी केंद्रीय घटक को अनदेखा न किया जाए।" (प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या–एक रूपरेखा पृष्ठ 27)। माध्यमिक स्तर पर, इसके अंतर्गत चार पुस्तकों को स्थान दिया गया था। इतिहास, भूगोल और नागरिक शास्त्र की सूची में अर्थशास्त्र को जोड़ा गया था। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2000 में सामाजिक विज्ञान के लिए बोधगम्य पाठ्यचर्या पर बल दिया गया है जिसे सूचनाओं के द्वारा बोझिल न बनाया जाए। साथ ही यह विशिष्ट विषय–वस्तुओं और मुद्दों के चयन द्वारा विचारों को अंतर्संबंधित किए जाने की आवश्यकता को भी स्पष्ट करता है, "भूगोल, इतिहास, नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र से संतुलित ढंग से विषय–वस्तु ली जा सकती है जिन्हें जटिल से सरल तथा अप्रत्यक्ष से प्रत्यक्ष की ओर उपयुक्त क्रम से रखा जाए।" (एन.सी.एफ.एस.ई.–2000, पृष्ठ 63)। सामाजिक विज्ञान की नयी पाठयपुस्तकों को विषयवस्तुओं के अनुसार क्रमबद्ध किया गया है जो, जहाँ तक संभव हो, विषय क्षेत्रों में अंतर्संबंध स्थापित करती हैं। अतः छठी से दसवीं कक्षा तक प्रत्येक कक्षा में सामाजिक विज्ञान की एक–एक पाठ्यपुस्तक है।

## 2. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 की संकल्पना

सामाजिक विज्ञान के शिक्षण पर चर्चा हेतु गठित राष्ट्रीय फोकस समूह के सदस्यों ने एक आदर्श सामाजिक अध्ययन पाठ्यचर्या के निर्माण हेतु किए गए पूर्व प्रयासों को अंगीकृत किया है। किंतु, इस आदर्श को स्पष्ट करने के लिए अभी बहुत काम किए जाने शेष हैं। यह स्पष्टीकरण आज के नव–उदार भारत के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है, जहाँ सामाजिक विज्ञान में निहित विषयों को रोज़गार पाने के लिए व्यर्थ और अनावश्यक समझा जाता है। अतः समिति के सदस्यों ने पहले समाज में सामाजिक विज्ञान को लेकर फैली भ्रांतियों पर विचार करने और इसे प्रस्तावित पाठ्यचर्या की रूपरेखा में प्राथमिकता देने को आवश्यक समझा। यह सुनिश्चित करने के लिए कि पाठ्यचर्या संबंधी संस्तुतियों को पर्याप्त रूप से पाठ्यपुस्तकों में शामिल किया जाए, समिति ने इस समीक्षा में मुख्य विचारणीय तथ्यों को प्रमुखता दी है ताकि सामाजिक विज्ञान को बौद्धिक व रोज़गारोन्मुखी बनाया जा सके।

## 2.1 सामाजिक विज्ञान संबंधी प्रचलित धारणाएँ

2.1.1 सामाजिक विज्ञान का एक प्रचलित दृष्टिकोण यह है कि यह एक अनुपयोगी विषय है। इसके कारण विद्यार्थियों के स्वाभिमान में कमी आती है जिससे पूरी कक्षा प्रभावित होती है, तथा अध्यापक और विद्यार्थी दोनों ही इसके विषयांगों को ग्रहण करने में अरुचि का अनुभव करते हैं। स्कूली शिक्षा की आरंभिक अवस्था से ही प्राय: विद्यार्थियों के दिमाग में यह बैठा दिया जाता है कि विज्ञान सामाजिक विज्ञान से बेहतर विषय है और प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की संपत्ति है। इसलिए इस तथ्य को उजागर करने की आवश्यकता है कि सामाजिक विज्ञान सामाजिक, सांस्कृतिक और विश्लेषणात्मक कौशल प्रदान करता है जो कि बढ़ते अन्योन्याश्रित विश्व से सामंजस्य स्थापित करने और इसके संचालन को निर्धारित करने वाली राजनैतिक तथा आर्थिक वास्तविकताओं से निपटने के लिए आवश्यक हैं।

2.1.2 ऐसा माना जाता है कि सामाजिक विज्ञान मात्र सूचनाओं का आदान-प्रदान करता है और पूरी तरह मूल पाठों पर केंद्रित है, जिन्हें मात्र परीक्षाओं के लिए कंठस्थ करने की आवश्यकता है। इन पाठों की विषय वस्तु को दैनिक वास्तविकताओं से असंबद्ध माना जाता है, जबकि इन्हें उस दुनिया से अधिक-से-अधिक संबद्ध होना चाहिए जिसमें हम रह रहे हैं। साथ ही इसे भूतकाल के विषय में अनावश्यक जानकारियाँ देने वाला भी माना जाता है। यह भी अनुभव किया जाता है कि परीक्षा पत्र इन व्यर्थ के तथ्यों को कंठस्थ करने का प्रतिफल देते हैं जिसमें बच्चों की वैचारिक समझ को पूरी तरह अनदेखा किया जाता है। सामाजिक विज्ञान में सूचनाओं के अत्यधिक भार को कम करने की दिशा में किसी भी प्रयास के साथ-साथ प्रचलित परीक्षा प्रणाली की समीक्षा भी की जाए।

2.1.3 यह एक धारणा है कि सामाजिक विज्ञान विषय में विशिष्टता प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए वांछित रोज़गार विकल्प उपलब्ध नहीं हैं। साथ ही यह भी अनुभव किया जाता है कि सामाजिक विज्ञान उन कौशलों से रहित है जिनकी वास्तविक दुनिया में कार्य निष्पादन के लिए आवश्यकता है। इससे ऐसा आभास होता है कि यह विषय व्यर्थ है। यह महत्त्वपूर्ण है कि सामाजिक विज्ञान के महत्त्व को मात्र तेज़ी से फैलते सेवा क्षेत्र के रोज़गारों में इसकी बढ़ती प्रासंगिकता द्वारा ही नहीं बल्कि एक विश्लेषणात्मक और रचनात्मक मस्तिष्क की नींव तैयार करने में इसकी अनिवार्यता को दर्शाते हुए बताया जाना चाहिए।

## 2.2 विचारणीय मुद्दे

**2.2.1 विषय वस्तु का भार**-राष्ट्रीय फोकस समूह इस बात पर बल देता है कि यशपाल समिति एवं एन.सी.एफ.एस.ई.-2000 के द्वारा इंगित बिंदुओं को दुहराने की आवश्यकता है कि हमें बिना समझे सूचनाओं के ठहराव पर कम से कम ज़ोर देना चाहिए। यदि पाठ्यक्रम निर्माताओं तथा पाठ्यपुस्तकों के लेखकों को प्रासंगिक सूचनाओं के ढेर से ही चुनना है कि क्या शामिल किया जाए तो उन्हें अधिक से अधिक तथ्यों को प्रस्तुत करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। इसके स्थान पर अवधारणाओं और सामाजिक-राजनैतिक यथार्थों के विश्लेषण की योग्यता के विकास पर ज़ोर देना चाहिए।

**2.2.2 विविधता और स्थानीय विषय वस्तु**-हमारे जैसे विविधतापूर्ण समाज में यह महत्त्वपूर्ण है कि सभी क्षेत्र और सामाजिक समुदाय पाठ्यपुस्तकों से जुड़ सकें। ऐसा पाठ्यपुस्तक रचना की केंद्रीकृत प्रकृति को देखते हुए प्राय: असंभव है, अतैव हमें एक ऐसा विकल्प ढूँढ़ना चाहिए और उसका संस्थानीकरण करने की ओर प्रयास करना चाहिए जो कि विकेंद्रीकृत पद्धति से कार्य करे और अध्यापक, विद्यार्थी और स्थानीय समुदाय अपने अनुभवों को उसमें शामिल कर गौरवान्वित हो सकें। प्रासंगिक स्थानीय विषय-वस्तु पठन-पाठन की प्रक्रिया का हिस्सा होना चाहिए, जिनका शिक्षण स्थानीय

पठन–पाठन स्रोतों की मदद से गतिविधियों के साथ किया जाना चाहिए।

**2.2.3 वैज्ञानिक दृढ़ता**–प्राय: यह माना जाता है कि मात्र प्राकृतिक और भौतिक तत्वों का ही वैज्ञानिक परीक्षण संभव है और मानव विज्ञान से संबंधित ज्ञान क्षेत्रों (इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र आदि) की प्रकृति वैज्ञानिक नहीं है। प्राकृतिक विज्ञानों को मिली वैधता और उच्च स्तर को देखते हुए सामाजिक विज्ञान के कुछ कर्त्ता भी अपने सिद्धांतों में भौतिक व प्राकृतिक विज्ञान का अनुकरण करने का प्रयास करते हैं। उपरोक्त के आधार पर यह जान लेना आवश्यक है कि प्राकृतिक व भौतिक विज्ञान की तरह सामाजिक विज्ञान भी वैज्ञानिक जाँच–पड़ताल हेतु उपयुक्त है। साथ ही, यह जानना भी आवश्यक है कि इन सिद्धांतों के लागू होने के तरीके प्राकृतिक और भौतिक विज्ञान के सिद्धांतों से भिन्न तो हैं, किंतु किसी भी अर्थ में कम नहीं।

**2.2.4 मूल्य संबंधी सरोकार**–सामाजिक विज्ञान स्वतंत्रता, विश्वास, परस्पर सम्मान और विविधता जैसे मानवीय मूल्यों के लिए एक जनाधार का निर्माण करने और उसका विस्तार करने की सैद्धांतिक जिम्मेदारी का भी वहन करता है। यदि इसे माना जाए तो सामाजिक विज्ञान शिक्षण का ध्येय बच्चे में एक आलोचनात्मक नैतिक और मानसिक ऊर्जा की स्थापना होना चाहिए जिससे वे उन सामाजिक बाध्यताओं से मुक्ति पा सकें जो इन मूल्यों को हानि पहुँचाते हैं। पर्यावरण, जाति/वर्ग असमानता और राज्य दमन जैसी समस्याओं पर अंतर्विषयक विधि से चर्चा करके पाठ्यपुस्तकों को बच्चे की विचार प्रक्रिया और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने का प्रयास करना चाहिए।

**2.2.5 विषयों के बीच अंतर्संबंध**–सामाजिक विज्ञान के विषय; जैसे–इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र और अर्थशास्त्र प्राय: सीमाओं को बनाए रखने को न्यायोचित ठहराते हैं। इन विषय की सीमाओं को खोले जाने की तथा निर्दिष्ट सिद्धांत को समझने के लिए कई प्रकार के दृष्टिकोणों को अपनाने की आवश्यकता है। एक समर्थ पाठ्यचर्या में ऐसे प्रसंगों की आवश्यकता है जो अंतर्विषयक विचारों को प्रेरित करें। ये प्रसंग सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक होने चाहिए तथा अवधारणाओं को बच्चे की आयु को ध्यान में रखते हुए सम्मिलित किया जाना चाहिए। ऐसी विषय–वस्तुओं के चयन की आवश्यकता है जिनके ज़रिये विभिन्न विषयक अधिगम एक गहरी और बहुमुखी समझ बनाने में मदद कर सके। अंतर्विषयक संबंध हेतु कुछ उप विषयों का चुनाव सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए। साथ ही भिन्न–भिन्न विषयों के पृथक् अध्याय होने चाहिए।

> एक वर्ष या सेमेस्टर में किसी एक उप विषय को अंतर्विषयक अधिगम का प्रयोग करते हुए पढ़ाया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप 'मंडी' ऐसा ही एक विषय है जिसका प्रयोग एक विशिष्ट विषय–वस्तु के अध्ययन के लिए और विभिन्न विषयों में संबंध स्थापित करने के लिए भी किया जा सकता है।

### 3. प्रस्तावित ज्ञान-मीमांसीय ढाँचा

उपर्युक्त प्रचलित धारणाओं को ध्यान में रखते हुए तथा सामाजिक विज्ञान लेखन में विचारणीय विषयों के आधार पर समिति ने प्रस्ताव किया है कि नए पाठ्यक्रम का खाका तैयार करने में निम्नलिखित चार बिंदु आधारभूत होंगे:

3.1.1 जैसा कि कोठारी कमीशन ने कहा है, भारत को केवल विकासवादी दृष्टिकोण के संदर्भ में नहीं देखा जाना चाहिए। इस उपागम में समस्या यह है कि इसमें निर्धनता, निरक्षरता और जातिवाद को राष्ट्र के विकास में बाधक माना गया है तथा जेंडर संबंधी मुद्दे भी उपेक्षित रहे हैं। इस विचारधारा से ऐसा आभास मिल

सकता है कि आम निरक्षर जनता ही देश की असफलता का कारण है। समिति ने पाठ्यचर्या के पुनर्निर्माण/पुनर्भिमुखीकरण के लिए ज्ञान–मीमांसीय परिवर्तन का सुझाव दिया है, ताकि भारत राष्ट्र के बारे में की जाने वाली बहु–विकल्पी कल्पनाओं को स्थान मिल सके। राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य के साथ स्थानीय परिप्रेक्ष्य का भी रचनात्मक संतुलन किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय तथा स्थानीय के बीच संतुलन के लिए स्थानीय सोच को शामिल करना आवश्यक है ताकि लोग स्वयं को राष्ट्र से जुड़ा हुआ समझ सकें। इससे राष्ट्र की गहन और समृद्ध धारणा का भी विकास होगा।

3.1.2 सामान्य रूप से ऐसा माना जाता है कि पाठ्यपुस्तकें ज्ञान का प्रमुख स्रोत हैं। यह धारणा सीखने वालों की सक्रिय भागीदारी के द्वारा होने वाले नवाचार की किसी भी संभावना के लिए द्वार बंद कर देती है। पाठ्यपुस्तकों को आगे जाँच–पड़ताल के अवसर प्रदान करने वाली सामग्री के रूप में देखा जाना चाहिए। यह सोच बच्चों को पाठ्यपुस्तकों से परे जाकर पठन और अवलोकन के लिए प्रोत्साहित करेगी।

3.1.3 अब तक सामाजिक विज्ञान की पाठ्यचर्या का बल मुख्य रूप से विकास संबंधी मुद्दों पर रहा है। ये मुद्दे महत्त्वपूर्ण तो हैं लेकिन समानता, न्याय और सामाजिक–राजनैतिक गरिमा आदि मुद्दों जैसे आदर्शक मूल्य संबंधी आयामों को समझने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। सामाजिक विज्ञान का शिक्षण प्रत्येक व्यक्ति के 'विकास' के योगदान से जोड़ा जाता रहा है। इस अंतर को देखते हुए विषय के केंद्र–बिंदु को उपयोगितावाद से समतावाद की तरफ ले जाने की ज़रूरत है, जो ऊपर वर्णित मूल्य संबंधी सरोकार रखता हो, से संबद्ध हों। सामाजिक और राजनैतिक मुद्दों पर इस प्रकार विचार किए जाने की आवश्यकता है ताकि विद्यार्थियों में सामाजिक न्याय के प्रति उचित जागरूकता पैदा हो जिससे सामाजिक विज्ञान का स्वाभिमान पुनर्जीवित हो सके।

इतिहास के पाठ्यक्रमों ने प्राय: समाज के कई वर्गों तथा भारत के कई क्षेत्रों की उपेक्षा की है जिस पर अब ध्यान देने की आवश्यकता है।

3.1.4 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 में 'नागरिक शास्त्र' के विषय के नाम को बदलकर 'राजनीति शास्त्र' करने का सुझाव दिया गया है। भारतीय स्कूली पाठ्यचर्या में नागरिक शास्त्र एक विषय के रूप में औपनिवेशिक काल में तब आया, जब भारतीयों में ब्रिटिश राज के प्रति 'निष्ठा' में कमी आ रही थी। ली वार्नर द्वारा लिखित नागरिक शास्त्र की प्रथम पुस्तक द *सिटिजन ऑफ़ इंडिया* के विश्लेषण द्वारा यह स्पष्ट होता है कि नागरिक शास्त्र की सांस्कृतिक अधिपत्य की औपनिवेशिक परियोजना संबद्ध था (जैन 1999)। नागरिकों की आज्ञाकारिता और निष्ठा पर बल, औपनिवेशिक व्यवस्था की प्रकृति, सुधार और तर्कसंगति, भारतीयों के व्यक्तित्व में कमी पर चर्चा– ये औपनिवेशिक नागरिक शास्त्र की मुख्य विशेषताएँ थीं। इसके विपरीत 'राजनीति शास्त्र' उस प्रक्रिया की गतिशीलता दर्शाता है जो शासन के प्रभुत्व की संरचनाओं तथा सामाजिक बलों द्वारा उनके विरोध को जन्म देती है। राजनीति शास्त्र किसी शिष्ट समाज की अवधारणा एक ऐसे समाज के रूप में करता है जिसके नागरिक संवेदनशील, जिज्ञासु, विचारशील तथा परिवर्तनकारी हों।

प्रस्तावित ज्ञान–मीमांसीय परिवर्तनों का सारांश निम्न है:

- पाठ्यपुस्तकों को सूचनाओं का एकमात्र स्रोत न समझ उन्हें मुद्दों को समझने के एक विशेष तरीके के रूप में देखना।
- भूतकाल की 'मुख्यधारा' का विवरण मात्र न देकर, ऐसा विवरण देना जिसमें अधिक–से–अधिक समूहों और क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व हो।
- उपयोगितावाद से समतावाद की ओर रुझान
- पाठ्यपुस्तक को बंद–बॉक्स नहीं बल्कि एक गतिशील दस्तावेज़ बनाना।

3.1.5 सामाजिक विज्ञान में सामान्यत: जेंडर संबंधी मुद्दों के लिए स्त्रियों को उदाहरण के रूप में लिया जाता रहा है। जैसे, इतिहास में स्त्रियों की चर्चा भारत के स्वतंत्रता संग्राम के अध्याय में प्राय: रानी लक्ष्मीबाई, सरोजिनी नायडू और कुछ अन्य तक ही सीमित है। परंतु पाठ्यचर्या में जेंडर परिप्रेक्ष्य शामिल करने का उद्देश्य मात्र महिलाओं के बढ़ते प्रतिनिधित्व तक ही सीमित रहना नहीं है, बल्कि किसी भी ऐतिहासिक घटना और समकालीन मुद्दों की चर्चा में स्त्री-परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखने की आवश्यकता है। इस परिवर्तन के लिए सामाजिक विज्ञान के वर्तमान पितृसत्तात्मक ढाँचे में ज्ञान-मीमांसीय परिवर्तन की आवश्यकता है।

## 4. सामाजिक विज्ञान का शिक्षण

सामाजिक विज्ञान का अध्ययन कई कारणों से महत्त्वपूर्ण है। यह बच्चों को इस योग्य बनाता है कि वे–

- उस समाज को समझें जिसमें वे रहते हैं—यह सीखें कि समाज की संरचना, शासन एवं प्रबंध कैसे होता है। यह भी समझें कि कौन से बल समाज को अनेक तरीकों से बदलते हैं तथा अनुप्रेषित करते हैं।
- भारतीय संविधान में प्रतिष्ठित मूल्यों; जैसे—न्याय, स्वतंत्रता, समानता, भाईचारा, एकता और राष्ट्रीय एकीकरण से अवगत हों और एक समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक समाज के निर्माण के महत्त्व को समझ सकें।
- समाज के सक्रिय, जिम्मेदार और चिंतनशील सदस्य के रूप में बढ़ने में समर्थ हों।
- विविध मतों, जीवन शैलियों और सांस्कृतिक रीति-रिवाज़ों का सम्मान करना सीखें।
- ग्रहण किए गए विचारों, संस्थाओं और परंपराओं के संबंध में प्रश्न कर सकें और उनकी जाँच-पड़ताल कर सकें।
- उस आनंददायक पाठ्य सामग्री को पढ़कर आनंद प्राप्त करें जो उन्हें उपलब्ध कराई गई है।
- ऐसे क्रियाकलापों में संलग्न हों जो उनमें सामाजिक और जीवन संबंधी कौशलों का विकास करें और उन्हें यह समझाएँ कि ये कौशल सामाजिक अंतर्संबंध हेतु महत्त्वपूर्ण हैं।
- पाठ्यपुस्तकों और कक्षाओं में विषय-वस्तु, भाषा तथा भावों में स्पष्टता होनी चाहिए। जेंडर-संवेदनशीलता तथा सामाजिक वर्गों और हर प्रकार की असमानताओं के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण होना चाहिए।

### 4.1 प्राथमिक स्तर

प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य हैं–

- बच्चों में प्रेक्षण, पहचान और वर्गीकरण की क्षमता का विकास करना।
- बच्चों में प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण की संपूर्ण समझ का विकास करना जिसमें प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण के अंतर्संबंधों पर बल हो।
- बच्चों में सामाजिक मुद्दों के प्रति संवेदना पैदा करना ताकि वे विविधता और अनेकता का सम्मान कर सकें।

### 4.1.1 कक्षा 1 और 2

प्राथमिक कक्षाओं में प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण को भाषा और गणित के अविभाज्य अंग के रूप में पढ़ाया जाएगा। बच्चों को भौतिक, जीव वैज्ञानिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों से उद्धरण देकर प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण को समझने की क्रियाओं में संलग्न करना चाहिए। प्रयोग की गई भाषा में जेंडर-संवेदनशीलता होनी चाहिए। शिक्षण प्रक्रिया सहभागिता तथा परिचर्चा पर आधारित होनी चाहिए। उदाहरण के लिए कथा वाचन, चित्रकला, नृत्य, गायन तथा संगीत पठन-पाठन प्रक्रिया के अंग होने चाहिए। एक शिक्षण-पुस्तिका क्रियाकलापों के उदाहरणों के साथ तैयार की जानी चाहिए, जिससे अवधारणाओं के विकास और पर्यावरण विषयों के प्रति संवेदनशीलता को प्रोत्साहन मिले।

### 4.1.2 कक्षा 3 से 5

इन कक्षाओं के लिए पर्यावरण अध्ययन (ई.वी.एस.) विषय को अलग से लागू किया जाएगा और इसे प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण पर चर्चा के द्वारा पढ़ाया जाएगा। प्राकृतिक पर्यावरण के अध्ययन में इसके संरक्षण और क्षरण से इसके बचाव पर बल दिया जाएगा। उन्हें इस तथ्य से भी परिचित कराया जाएगा कि सामाजिक पर्यावरण मानव द्वारा निर्मित है। बच्चों को ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में सामाजिक मुद्दों; जैसे–गरीबी, बालश्रम, निरक्षरता, जाति और वर्ग–आधारित असमानता आदि सामाजिक विषयों पर संवेदनशील बनाया जाएगा। पठन सामग्री बच्चों के जीवन के दिन–प्रतिदिन के अनुभवों को परिलक्षित करने वाली होगी।

इस स्तर पर सभी अवधारणाएँ क्रियाकलापों पर आधारित होनी चाहिए। ये क्रियाकलाप स्थानीय परिदृश्य से लिए गए उदाहरणों से संबंधित होने चाहिए। शिक्षक पुस्तिका इस तरह बनाई जानी चाहिए जिसमें भिन्न–भिन्न विषयों को संचालित करने के स्पष्ट निर्देश दिए गए हों।

### 4.2 उच्च प्राथमिक स्तर

उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य हैं–

- मानव जाति और अन्य जीवों के निवास के रूप में पृथ्वी की अवधारणा का विकास करना।
- वैश्विक संदर्भ में अपने क्षेत्र, प्रदेश और देश का अध्ययन करने के लिए विद्यार्थी को प्रेरित करना।
- विश्व के अन्य भागों में समकालीन विकास के संदर्भ में विद्यार्थी को भारत के अतीत के अध्ययन के लिए प्रेरित करना।
- सामाजिक और राजनैतिक संस्थाओं के कार्यों और सक्रियता तथा राष्ट्र की प्रक्रियाओं से विद्यार्थियों को अवगत कराना।

इस स्तर पर, सामाजिक विज्ञान के विषय क्षेत्रों का अध्ययन आरंभ किया जाएगा, जिसकी पाठ्य–सामग्री इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र और अर्थशास्त्र से ली जाएगी। साथ ही बच्चों को समकालीन मुद्दों और समस्याओं से भी अवगत कराया जा सकता है। गरीबी, निरक्षरता, बालश्रम और बंधुआ मज़दूरी, वर्ग, जाति, जेंडर और पर्यावरण जैसे मुद्दों पर बल देने की आवश्यकता है। भूगोल और अर्थशास्त्र एक साथ स्थानीय से वैश्विक भिन्न स्तरों पर पर्यावरण, संसाधनों तथा विकास संबंधी मुद्दों के एक सही परिप्रेक्ष्य के विकास में सहायक हो सकते हैं। इसी प्रकार, इतिहास को अनेकत्व की अवधारणाओं पर बल देते हुए पढ़ाया जाएगा। स्थानीय, प्रांतीय और केंद्रीय स्तरों पर सरकारों का गठन और संचालन तथा भागीदारी की लोकतांत्रिक प्रक्रिया से भी बच्चे को अवगत कराया जाएगा।

### 4.3 माध्यमिक स्तर

माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण का उद्देश्य विद्यार्थियों में आलोचनात्मक और अवधारणात्मक क्षमता का विकास करना है, ताकि वे इस योग्य हो सकें कि–

- आधुनिक और समकालीन भारत तथा विश्व के अन्य भागों से उदाहरण लेकर आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन और विकास की प्रक्रियाओं को समझें।
- विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक मुद्दों तथा चुनौतियों जैसे–गरीबी, बालश्रम, आश्रयहीनता, निरक्षरता तथा असमानता के अनेकों अन्य आयामों की आलोचनात्मक जाँच करें।
- लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष समाज में नागरिकों के अधिकार और दायित्वों को समझें।
- संवैधानिक दायित्वों को निभाने में राज्य की भूमिका और उत्तरदायित्वों को समझें।
- विश्व की अर्थव्यवस्थाओं और राजनीति के संदर्भ में भारत में परिवर्तन और विकास की प्रक्रिया को समझें।

**एकलव्य की पाठ्यपुस्तक**

एकलव्य द्वारा तैयार की गई कक्षा 7 की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक सामाजिक विज्ञान की पाठ्यचर्या में समाजशास्त्रीय संवाद की शुरुआत का एक गंभीर प्रयास है। यह देश में न्यायिक संरचना पर प्रकाश डालती है। 'अलग-अलग समाज में न्याय के तरीके' नामक अध्याय में प्रयुक्त केस-स्टडी और घटनाएँ इस प्रकार दी गई हैं ताकि बच्चे इन्हें भली-भाँति समझ सकें। यह एक महत्त्वपूर्ण समस्या पर प्रकाश डालती है। इसमें शिक्षकों में जाति-आधारित पंचायतों के बारे में एक प्रबल स्वच्छंदतावाद उभरता है। यद्यपि शिक्षकों की प्रतिक्रिया में भिन्नता थी, फिर भी जाति-आधारित पंचायतों के पक्ष में न्याय की आधुनिक पद्धति की अवहेलना की प्रधानता रही। शिक्षकों द्वारा बच्चों के साथ परिचर्चा में न्यायपालिका के आधुनिक स्वरूप को कम गंभीरता से लिए जाने की आशंका है और ऐसी संभावना है कि जाति पंचायतों को न्याय देने के मामले में अधिक निष्पक्ष और स्फूर्त माना जाएगा।

- स्थानीय समुदायों के अधिकारों को उनके पर्यावरण और संसाधनों के न्यायपूर्ण उपभोग के साथ-साथ प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण की आवश्यकता के संदर्भ में समझें।

माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान में इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र और अर्थशास्त्र के तत्व शामिल हैं। मुख्य बल समकालीन भारत पर होगा तथा विद्यार्थी को भारत की सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों की गहरी समझ विकसित कराई जाएगी। प्रस्तावित ज्ञान-मीमांसीय बदलाव के अनुसार समकालीन भारत की चर्चा बहु-परिपेक्षीय होगी जिसमें आदिवासी, दलित और मताधिकार से वंचित अन्य लोगों के परिप्रेक्ष्यों को भी ध्यान में लिया जाएगा तथा प्रयास किया जाएगा कि पठन सामग्री को यथासंभव बच्चों के दैनिक जीवन से जोड़ा जाए।

इतिहास में भारत के स्वतंत्रता संग्राम में विभिन्न क्षेत्रों के योगदान तथा आधुनिक विश्व के विकास के संदर्भ में समकालीन इतिहास के अन्य आयामों का अध्ययन किया जा सकता है। भूगोल से संबंधित मुद्दों को बच्चे को संरक्षण और पर्यावरण संबंधी विषयों में आलोचनात्मक मूल्यांकन सिखाने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए पढ़ाया जाना चाहिए। राजनीति शास्त्र में उन दार्शनिक आधारों पर बल दिया जाना चाहिए जो भारतीय संविधान की मुख्य रूपरेखा की नींव हैं; जैसे-समानता, स्वतंत्रता, न्याय, भाईचारा, आत्मसम्मान, अनेकता और शोषण से मुक्ति आदि पर गहराई से परिचर्चा। चूँकि अर्थशास्त्र के विषय से बच्चे का परिचय इस स्तर पर पहली बार कराया जा रहा है, इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि चर्चा जन-साधारण के परिप्रेक्ष्य में हो। उदाहरण के लिए, गरीबी और बेरोज़गारी पर चर्चा संख्याओं के माध्यम से नहीं की जानी चाहिए, बल्कि इन विषयों को आर्थिक संस्थानों के अभिजातीय संचालन और आर्थिक संबंधों द्वारा संपोषित असमानता के आधार पर समझाया जाना चाहिए।

इसी स्तर पर पर इस बात का निर्णय भी लिया जाता है कि आगे के अध्ययन के लिए किस विषय को चुना जाए। अत: यह महत्त्वपूर्ण है कि इन विषयों की प्रकृति, अवसर और विधियों से विद्यार्थियों को अवगत करा दिया जाए। यद्यपि ध्यान रखा जाना चाहिए कि इस अतिरिक्त जानकारी से बच्चे पर ज़्यादा बोझ न पड़े और उन्हें यह स्पष्ट हो जाए कि भविष्य में विषय का अध्ययन कैसा हो और इन बिंदुओं को वांछनीय कौशलों के निर्माण से किस प्रकार जोड़ा जाए।

### 4.4 उच्चतर माध्यमिक स्तर

दस वर्ष की सामान्य शिक्षा के क्रम में सभी विद्यार्थियों के लिए समान अध्ययन की योजना है। उच्च माध्यमिक स्तर इसलिए महत्त्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि यह

विद्यार्थियों को उनकी आवश्यकता, रुचि और अभिवृत्ति के अनुसार विषय क्षेत्र चुनने का अवसर देता है। कुछ विद्यार्थियों के लिए यह स्तर उनकी औपचारिक शिक्षा की समाप्ति और उनके कार्य और रोज़गार के क्षेत्र में कदम रखने का समय हो सकता है, तो कुछ अन्य के लिए उच्च शिक्षा का आधार। वे अपनी प्राथमिकताओं के आधार पर या तो शैक्षिक पाठ्यक्रम को चुन सकते हैं या रोज़गारपरक व्यावसायिक पाठ्यक्रम को। इस स्तर पर डाली गई नींव उन्हें आधारभूत ज्ञान और आवश्यक कौशल से युक्त करने योग्य होनी चाहिए जिससे वे चुने गए क्षेत्र में सार्थक योगदान कर सकें। विद्यार्थियों की विभिन्न प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम की रूपरेखा और योजना सावधानीपूर्वक बनाई जाए ताकि वे बिना किसी तनाव के ये अनुभव हासिल करें।

इस स्तर पर शिक्षा को लचीला और विविधतापूर्ण बनाकर इसकी नींव को इस उद्देश्य से मज़बूत बनाया जाना चाहिए ताकि विद्यार्थियों को न केवल कार्यक्षेत्र में शामिल होने योग्य बनाया जा सके बल्कि उच्च शिक्षा के साथ उपयुक्त संयोजन भी स्थापित किया जाए। विविधीकरण एवं लचीलेपन के उद्देश्यों को स्वीकार करने के लिए समानता एवं उत्कृष्टता जैसे प्राचलों से समझौता नहीं किया जा सकता। विभिन्न क्षेत्रों, संस्कृति एवं पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को भी उचित रूप से तथा सावधानीपूर्वक ध्यान में रखा जाना चाहिए।

हमारे लिए महत्त्वपूर्ण है कि अध्ययन के कई प्रकार के पाठ्यक्रमों के निर्माण, पाठ्यचर्या की विस्तृत रूपरेखा के निर्माण, अधिगम परिणामों के निर्धारण, विभिन्न प्रकार की निर्देशात्मक सामग्रियाँ—दृश्य और श्रव्य—और 'मल्टीमीडिया' पैकेज के निर्माण तथा मूल्यांकन के बेहतर साधनों के विकास द्वारा हमारे राष्ट्रीय मानक भी वैश्विक प्रतिस्पर्धा की चुनौतियों का सामना करने योग्य हो जाएँ।

सामाजिक विज्ञान और वाणिज्य के विविध पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को उपलब्ध कराए जाने चाहिए ताकि वे अपने रुझान और प्राथमिकता को ध्यान में रखते हुए विकल्पों का चुनाव कर सकें। विषयों और पाठ्यक्रमों को अलग-अलग धाराओं में वर्गीकृत करने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को किसी भी वर्ग के विषय या पाठ्यक्रम को अपनी आवश्यकता, रुचि और अभिवृत्ति के अनुसार चयन की स्वतंत्रता होनी चाहिए। इस स्तर पर सामाजिक विज्ञान में राजनीति शास्त्र, भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और मनोविज्ञान आदि विषय सम्मिलित होंगे। व्यावसायिक शिक्षा और लेखाशास्त्र वाणिज्य के अंग हैं।

इस स्तर पर सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के निम्न उद्देश्य हो सकते हैं—

- उचित विश्वविद्यालयी पाठ्यक्रम और/या व्यवसाय के चुनने में विद्यार्थियों को स्वयं की रुचियों तथा अभिवृत्तियों को परखने में अभिरुचि और अभिदक्षता में सहायता करना।
- विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों में ज्ञान के उच्च स्तर को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- भावी नागरिकों में समस्या-समाधान करने की योग्यताओं और रचनात्मक चिंतन को प्रोत्साहित करना।
- विषय विशेष में सूचनाओं और आँकड़ों को संगृहीत और संशोधित करने के विभिन्न तरीकों से विद्यार्थियों को परिचित कराना। इस प्रक्रिया में उन्हें निष्कर्ष तक पहुँचने तथा नयी अंतर्दृष्टि और ज्ञान के निर्माण में मदद करना।

### 5. शिक्षण के उपागम

विद्यार्थियों द्वारा परस्पर अंतर्क्रिया के वातावरण में ज्ञान तथा कौशल अर्जित करने में मदद देने के लिए सामाजिक विज्ञान के शिक्षण को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। प्राय: देखा गया है कि पाठ्यचर्या में चर्चा किए गए मुद्दों और बच्चे के प्रत्यक्ष ज्ञान में अंतर

**स्थानीय शिल्प और संग्रहालय**

सामाजिक विज्ञान के पठन-पाठन को अधिक मनोरंजक और असरदार बनाने के लिए शिक्षण की विधियों में नवाचारों की आवश्यकता है। सामाजिक विज्ञान के अधिगम में स्थानीय, प्रांतीय और राष्ट्रीय स्तर के संग्रहालयों में भ्रमण को शामिल करना चाहिए। विद्यार्थियों से स्थानीय परिवेश की छानबीन करने और स्थानीय कौशल और सामग्री का उपयोग कर रहे विभिन्न शिल्पों में रत शिल्पी समुदायों का प्रेक्षण करने को कहा जा सकता है। इन हस्तशिल्पों को विद्यालय के एक छोटे से हिस्से में प्रदर्शित किया जा सकता है, जिसका संग्रहालय के रूप में विकास किया जा सकता है।

विद्यालयों के अपने सामाजिक विज्ञान संबंधी संग्रहालय हो सकते हैं। विद्यार्थियों से ग्रीष्मावकाश के दौरान ऐतिहासिक स्मारकों के मॉडल, ज्वालामुखी और भूकंप के प्रभाव दिखाते चार्ट्स, शब्द पहेली या पहेली बनाने के लिए कहा जा सकता है। बच्चे प्राकृतिक पर्यावरण से संबंधित तत्वों को रेखांकित या चित्रित कर सकते हैं। स्कूली पाठ्यक्रम से संबंधित समाचारपत्रों या पत्रिकाओं की कतरनें या वेबसाइट से एकत्रित सूचनाएँ प्रदर्शित की जा सकती हैं। इस संग्रहालय को समय-समय पर विभिन्न तरीकों से प्रस्तुत किया जा सकता है, ताकि यह पुराना न पड़े। विद्यार्थी अन्य क्रियाकलापों में भी भाग ले सकते हैं जैसे–

- स्कूल में सामाजिक विज्ञान सप्ताह मनाया जा सकता है।
- विद्यार्थियों को पास के संग्रहालय या कला और शिल्प केंद्र घुमाने ले जाया जा सकता है।
- विद्यार्थियों को रात्रि का आसमान, चंद्रमा की कलाओं, सूर्योदय तथा सूर्यास्त देखने के लिए तथा दिन और रात की अवधि का और उनके अनुभवों का वर्णन करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।
- विद्यार्थियों को ऐतिहासिक स्मारकों पर ले जाकर, इनके चित्र बनाकर इनके विषय में लिखने को कहा जा सकता है। इन चित्रों को विद्यालय में प्रदर्शित किया जा सकता है।

शिक्षक विभिन्न क्रियाकलापों में बच्चों को शामिल कर सकता है जिससे वे कुछ अवधारणाओं को सजीव अनुभवों के द्वारा सीख सकें। उदाहरण के लिए, बच्चे सहकारी संस्था को खुद चलाकर सहकारिता आंदोलन के संबंध में सीख सकते हैं (जैसा जामिया स्कूल में किया गया था)। विद्यालयों के खुले रहने के समय में लचीलापन होना चाहिए। उदाहरण के लिए चाँद के विषय में जानने के लिए स्कूल में चाँद देखने की व्यवस्था होनी चाहिए, जिसके लिए स्कूल का अँधेरा होने तक खुला रहना आवश्यक है।

बढ़ता जा रहा है। यह महत्त्वपूर्ण है कि सीखने की प्रक्रिया बच्चों और शिक्षकों में जाँच-पड़ताल की प्रवृत्ति और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करे।

शिक्षक पाठ्यचर्या को विद्यार्थियों तक पहुँचाने और अवधारणाओं को विद्यार्थियों के लिए ग्राह्य भाषा में सरलीकृत करने का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। इसलिए शिक्षण को शिक्षकों और बच्चों दोनों के लिए एक साथ सीखने के अवसर के रूप में देखा जाना चाहिए, जिससे संस्था के अंतर्गत ही एक लोकतांत्रिक संस्कृति का विकास किया जा सकता है। सीखने की प्रक्रिया को भागीदारी पूर्ण बनाने के क्रम में सूचना के मात्र आदान-प्रदान से हटकर वाद-विवाद और परिचर्चा आदि में लगने की आवश्यकता है। शिक्षण की यह विधि विद्यार्थियों और शिक्षकों, दोनों को सामाजिक यथार्थताओं के प्रति सचेत रखेगी।

अवधारणाओं को व्यक्तियों और समुदायों के सजीव अनुभवों द्वारा विद्यार्थियों को स्पष्ट किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, सामाजिक समानता की अवधारणा को उन समुदायों के सजीव अनुभवों का उद्धरण देकर बेहतर ढंग से समझा जा सकता है, जो कि बच्चे के सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश का निर्माण करते हैं। यह भी प्राय: देखा गया है कि सांस्कृतिक, सामाजिक और वर्ग भिन्नता के कारण कक्षा में पक्षपात, पूर्वाग्रह और प्रवृत्तियाँ पैदा होती हैं। इसलिए शिक्षण के उपागम को अबाध (खुला) रखने की आवश्यकता है। शिक्षकों को कक्षा में सामाजिक यथार्थता के विभिन्न आयामों की चर्चा करनी चाहिए और स्वयं में और विद्यार्थियों में स्वबोध बढ़ाने की दिशा में कार्य करना चाहिए।

कक्षा में अनुपूरक पठन सामग्री की उपलब्धता से पाठ्यपुस्तकों और शिक्षकों की स्वायत्तता बढ़ेगी और साथ ही साथ क्रियाकलापों और परियोजनाओं की योजना बनाने में आत्मविश्वास का स्तर भी बढ़ेगा। इन सामग्रियों के निर्माण द्वारा अपरिमित सांस्कृतिक एवं स्थानीय संदर्भों को समाहित कर सकने वाले परिमित पाठ्यक्रम की आवश्यकता को पूरा किया जा सकता है।

मूलभूत ढाँचे के न्यूनतम प्रबंध और ज़रूरी योग्यता न रखने वाले पैरा-शिक्षकों के कारण विषयों के अध्ययन पर जो विपरीत प्रभाव पड़ा है राष्ट्रीय फोकस समूह उसकी भी चर्चा करता है। पर्याप्त संरचनागत सुविधाओं और सामाजिक विज्ञान के शिक्षण के बीच संबंध पर प्राय: कोई टिप्पणी नहीं की जाती क्योंकि सामाजिक विज्ञान के लिए किसी निश्चित स्थान की आवश्यकता नहीं होती; जिस तरह विज्ञान के लिए प्रयोगशाला की आवश्यकता होती है। हालाँकि सामाजिक विज्ञान का प्रभावी शिक्षण स्कूल के पुस्तकालय के सक्षम संचालन और उन शिक्षकों से अवश्य ही जुड़ा हुआ है, जो पुस्तकालय द्वारा चुनौतीपूर्ण परियोजनाओं और क्रियाकलापों के निर्माण के लिए उपलब्ध कराए गए संसाधनों के प्रयोग में प्रशिक्षित हैं। इन परियोजनाओं के क्रियान्वयन से रटंत पद्धति से समझ कर सीखने की ओर बदलाव तभी हो सकता है, जब अन्य साधनों के द्वारा शिक्षक बच्चे की समझ का मूल्यांकन करे न कि मात्र परियोजना को पूर्ण करने पर ध्यान दे। जिस परियोजना कार्य द्वारा विद्यार्थी सीख रहा है उसका अधिक सूक्ष्म मूल्यांकन होना चाहिए ताकि माता-पिता द्वारा बाज़ार से खरीदे जाने वाली इन परियोजनाओं के वर्तमान 'विनिर्माण' को कम किया जा सके। इससे इस प्रचलित धारणा को बदलने में सहायता मिलेगी कि परियोजना कार्य में अंक कम प्रयास में ही मिल जाते हैं।

### 5.1 शिक्षक-प्रशिक्षण

कुछ तो शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम पर उचित बल न दिए जाने के कारण सामाजिक विज्ञान का शिक्षण बहुत प्रभावी नहीं रहा है। जहाँ सेवापूर्व प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के पुनरीक्षण की आवश्यकता है, वहीं सेवाकालीन प्रशिक्षण पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिए राज्य को आवश्यक व्यवस्था तंत्र और आर्थिक सहयोग देना चाहिए जिससे शिक्षकों के विषय संबंधी ज्ञान को अद्यतन किया जा सके। सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों की शिक्षक-पुस्तिका के प्रयोग को अनिवार्य किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों की समझ के विकास हेतु पुस्तकों को 'एकमात्र स्रोत' के रूप में न मान कर 'स्रोतों में से एक' के रूप में मानना चाहिए। वस्तुत: बहुत-सी समस्याओं जैसे आत्मसम्मान की कमी, पाठ्यक्रम का बोझ, सामग्रियों की अधिकता और रटने की प्रवृत्ति आदि को एक ऐसा समर्थ शिक्षक ही अधिक प्रभावशाली ढंग से संबोधित कर सकता है, जिसकी क्षमताओं का विकास शिक्षक-प्रशिक्षण द्वारा हुआ हो। सेवापूर्व और सेवाकालीन दोनों स्तरों पर गहन और प्रभावी प्रशिक्षण द्वारा सामाजिक विज्ञान संबंधी अनुसंधानों के परिणामों को भी शिक्षकों की वृहत संख्या के लिए सुलभ बनाया जा सकता है।

### 5.2 पठन-पाठन सामग्री

पठन-पाठन सामग्री का विकास करते समय निम्नलिखित मुद्दों का भी ध्यान रखा जा सकता है:

- सामाजिक विज्ञान के विभिन्न अंगों के लिए समान शिक्षण समय और अंक निर्धारित होने चाहिए।
- विभिन्न विषयों में विषय-वस्तु के वितरण में एक उचित संतुलन होना चाहिए और जहाँ भी संभव हो परस्पर संबंधों को भी इंगित किया जाना चाहिए।
- पाठ्यक्रम में शुरू से अंत तक निरंतरता बनाए रखने के लिए विषयों को उचित तर्कसंगत क्रम में व्यवस्थित किया जाना चाहिए।
- पाठ्यपुस्तक के निर्माण में यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि पुस्तक के प्रत्येक भाग में अध्यायों की संख्या समान हो।
- प्रत्येक अध्याय के पश्चात तकनीकी शब्दों की एक शब्दावली और पुस्तक के अंत में एक अनुक्रमणिका दी जानी चाहिए।
- प्रकाशन से पूर्व जेंडर तथा सामाजिक पूर्वाग्रह की जाँच के लिए पुस्तक का परीक्षण किया जाना चाहिए।
- अनुलिपीकरण (दोहराव) से बचने के लिए और शैली की एकरूपता सुनिश्चित करने के लिए प्रकाशन से पूर्व पाठ्यपुस्तक की जाँच की जानी चाहिए।

## संदर्भ सूची

*माध्यमिक शिक्षा आयोग की रिपोर्ट (1953),* शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली
*शिक्षा आयोग की रिपोर्ट (1964-66),* शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली
*दस-वर्षीय स्कूल के लिए पाठ्यचर्या-एक रूपरेखा (1975),* एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
*प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम-एक रूपरेखा (1988),* एन.सी.ई.आर.टी. नयी दिल्ली
*स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2000),* एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
*'शिक्षा बिना बोझ के' राष्ट्रीय सलाहकार समिति की रिपोर्ट (1993),* मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
जैन, मनीष (1999), *इवोल्यूशन ऑफ़ सिविक्स एंड सिटिज़न इन इंडिया,* साउथ एशियन कांफ्रेंस ऑन एजुकेशन में प्रस्तुत पत्र, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली